ग़ज़ल -05

- रविशंकर श्रीवास्तव

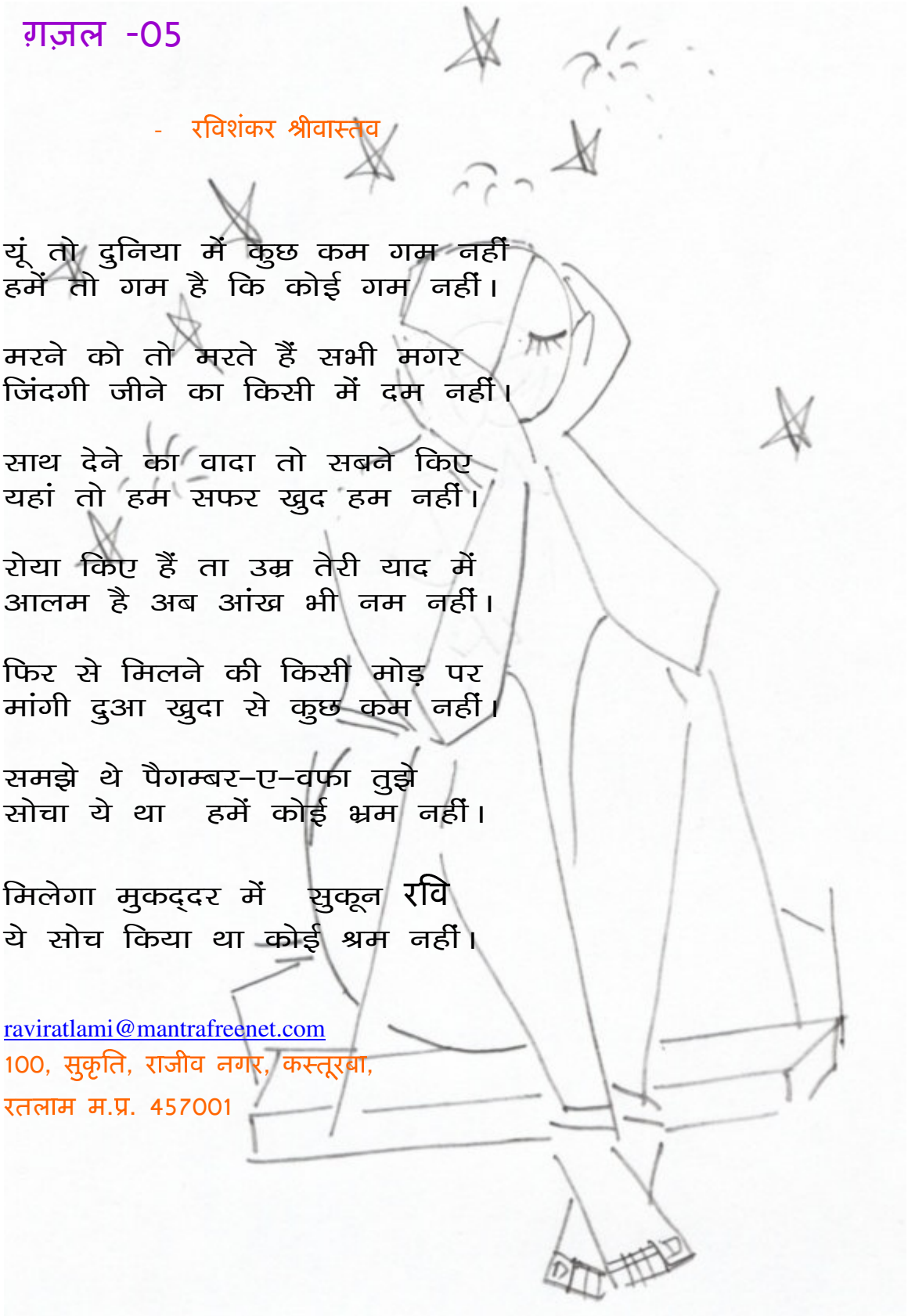

यूं तो दुनिया में कुछ कम गम नहीं
हमें तो गम है कि कोई गम नहीं।

मरने को तो मरते हैं सभी मगर
जिंदगी जीने का किसी में दम नहीं।

साथ देने का वादा तो सबने किए
यहां तो हम सफर खुद हम नहीं।

रोया किए हैं ता उम्र तेरी याद में
आलम है अब आंख भी नम नहीं।

फिर से मिलने की किसी मोड़ पर
मांगी दुआ खुदा से कुछ कम नहीं।

समझे थे पैगम्बर–ए–वफा तुझे
सोचा ये था हमें कोई भ्रम नहीं।

मिलेगा मुकद्दर में सुकून रवि
ये सोच किया था कोई श्रम नहीं।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001